JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यों की आवष्यकता, सार्थकता एंव महत्व

The need and significance of values in the current social context

(असरा बीबी सिद्दीकी),
असिस्टेंट प्रोफेसर(समाजषास्त्र)
करामत हुसैन मुस्लिम गर्ल्स पी0जी0 कालेज,
लखनऊ।

मूल्य किसी भी समाज का सर्वोच्च आधार स्तम्भ होते हैं। समाज परम्परागत हो अथवा आधुनिक, प्रत्येक युग में मूल्य अपना असीम महत्व रखते हैं। यदि भारतीय समाज की बात की जाये तो मूल्य भारतीय संस्कृति के प्रतीक एवं केन्द्र बिन्दु हैं। मूल्य जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित होते हैं जो मनुश्य का सफल समाजीकरण करने में अपनी महत्वपूर्ण एंव सषक्त भूमिका निभाते हैं। 'मूल्यों की अवधारणा को स्पश्ट करते हुए राधाकमल मुखर्जी ने लिखा है ''मूल्य सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त वे इच्छाएं अथवा लक्ष्य हैं जिनका सामाजिक सीख या समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति के जीवन में अन्तरीकरण हो जाता है, और इस प्रकार यह भावनात्मक आधार पर हमारी प्राथमिकताएं, मानदण्ड और आकांक्षाएं बन जाती है।''[1]

मूल्य जीवन पर्यन्त एक मार्गदर्षक के रूप में सफल एवं सार्थक जीवन व्यतीत करने के लिए मनुश्य को प्रेरित करने का कार्य करते हैं एंव मनुश्य को सदमार्ग पर चलने के लिये प्रोत्साहित करते रहते हैं।

मूल्यों की मानव जीवन में उपयोगिता तथा समाज में महत्वः–

- मूल्य व्यक्ति का नैतिक चारित्रिक, सामाजिक एंव आध्यात्मिक विकास करते हैं।
- मूल्य मनुश्य को उसके कर्तव्यों एंव उत्तरदायित्वों का उचित रूप में पालन करने की प्रेरणा देते हैं।
- मूल्य व्यक्ति को उसकी प्रस्थिति के अनुरूप आदर्ष भूमिका निभाने के प्रति जागरूक करते हैं, जैसे सन्तान का अपने माता पिता के प्रति, माता पिता का अपनी सन्तान के प्रति, भाई बहन का एक दूसरे के प्रति तथा पति पत्नी का एक दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व इत्यादि।
- मनुश्य के एक नागरिक के रूप में किस प्रकार के कर्तव्य हैं तथा एक सभ्य एंव कर्तव्य परायण नागरिक के रूप में किस प्रकार अपनी जिम्मेदारियों को निभाना है इसका बोध भी मूल्य कराते हैं।
- बालक के सफल एंव स्वस्थ मे भी मूल्य अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते है।
- मूल्य यह भी बताते हैं कि समाज के प्रति मनुश्य के क्या कर्तव्य है।
- मूल्य व्यक्ति में नैतिक गुणों का विकास करते हैं जैसे प्रेम, दया, भाईचारा, सहिश्णुता, त्याग, सहानुभूति, परानुभूति, सत्य, ईमानदारी आदि की भावना को विकसित करने का कार्य करते हैं।
- मनुश्य के व्यवहार को नियन्त्रित रखने में मूल्य अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- मूल्य व्यक्ति को अनुषासित जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं तथा मनुश्य में आत्म अनुषासन विकसित करते हैं।
- मूल्य व्यक्ति को कुमार्ग पर चलने से रोकते हैं।
- मूल्य विपरीत एंव प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवन को धैर्य पूर्वक जीने की क्षमता का विकास करते हैं।
- मूल्य अर्न्तपीढ़ी संघर्श को कम करने का कार्य भी करते हैं।

- मूल्य अपने कार्यक्षेत्र एंव व्यवसाय के प्रति पूर्ण ईमानदारी एवं निश्ठा की भावना को प्रवाहित करने का कार्य करते हैं।
- मूल्य मनुश्य में देष भक्ति एवं वसुधैव कुटुम्बकम की भावना विकसित करते हैं।
- मनुश्य में सकारात्मक एवं आषावादी दृश्टिकोण विकसित करने का कार्य भी मूल्य करते हैं।
- मूल्य व्यक्ति को प्रकृति एंव पर्यावरण के प्रति किस प्रकार अपने उत्तरदायित्वों का किस प्रकार निर्वहन करना है इसकी जागरूकता भी विकसित करते है तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना की भावना भी विकसित करते है।
- मूल्य पषु पक्षियों के प्रति दयाभाव तथा अहिंसा की भावना बढाते हैं।
- मूल्य मनुश्य में मानवता की सेवा की भावना विकसित करते हैं।

इस रूप में मूल्य मनुश्य एंव समाज के विकास में अग्रणी भूमिका निभाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

"प्रो0 स्प्रेंगर ने मूल्यों को निम्नलिखित भागों में बांटा हैः–

1. सैद्धान्तिक या बौद्धिक मूल्य।
2. आर्थिक या ब्यावहारिक मूल्य।
3. सौन्दर्यात्मक मूल्य।
4. सामाजिक या परार्थवादी मूल्य।
5. राजनीतिक या सत्ता सम्बंधी मूल्य।
6. धार्मिक या रहस्यात्मक मूल्य।

डा0 मुकर्जी ने भी मूल्यों के इस वर्गीकरण को स्वीकार किया है। आपने मूल्यों को प्रमुख रूप से दो भागों में बांटा है– साध्य मूल्य तथा साधन मूल्य। साध्य मूल्य वे लक्ष्य तथा संतुश्टियां हैं जिन्हें मानव तथा समाज जीवन तथा मस्तिश्क के विकास के लिए अपनाता है, जो व्यक्ति के व्यवहार के अंग होते हैं। साध्य मूल्य अमूर्त एवं

पारलौकिक होते हैं, इनका सम्बन्ध जीवन के उच्चतम आदर्शों एवं लक्ष्यों से होता है। 'सत्यम् षिवम् सुन्दरम्' साध्य मूल्य का उदाहरण हैं।'' [2]

मूल्यों का व्यक्ति में संचार अपने परिवार, माता–पिता, विद्यालय, षिक्षक, नातेदार, संस्कृति, संस्कारों एंव नैतिक षिक्षा इत्यादि के माध्यम से होता है। जिस समाज में लोग मूल्यों का पालन नहीं करते हैं उस समाज में विघटन तनाव जैसी समस्याओं की सम्भावना बनी रहती है। इसके विपरीत जिस समाज में मनुश्य मूल्यों एंव आदर्शों का पालन करते है वह समाज प्रगति एंव विकास के मार्ग पर तीव्र गति से अग्रसर होता है इसलिये यह नितान्त आवष्यक है कि लोग समाज में आवष्यक एंव अनिवार्य रूप से मूल्यों को अपने भीतर आत्मसात करें एंव उनका अपने व्यवहार में पालन करें। इस प्रकार मूल्य समाज में तथा मनुश्य के जीवन में सर्वोच्च स्थान परिलक्षित करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. समाजषास्त्र, प्रो0डा0जी0के0अग्रवाल, पृश्ठ संख्या–49
2. भारतीय समाजषास्त्र के पथ–प्रदर्षक (चिन्तक)
   प्रो0एम0एल0गुप्ता, डा0 डी0डी0षर्मा, पृश्ठ संख्या–13–14